<u>शोध-प्रारूप</u>

नागपुरी काव्य में गीतितत्व की विवेचना : एक अध्ययन

राँची विश्वविद्यालय, राँची से पीएच.डी. उपाधि हेतु

प्रस्तावित शोध-प्रारूप

स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग

संकाय : जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

वर्ष : 2024

शोध निर्देशक

डॉ. रामजय नाईक
सहायक प्राध्यापक
नागपुरी विभाग
जे.एन. कॉलेज, धुर्वा
राँची विश्ववविद्‌यालय, राँची

शोधकर्त्ता

नैना तिर्की
यू.जी.सी. नेट /जे.आर.एफ.
स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग
राँची विश्ववविद्‌यालय, राँची

नागपुरी काव्य में गीतितत्व की विवेचना: एक अध्ययन

भूमिका :- काव्य, कविता या पद्य, साहित्य की वह विधा है जो किसी कहानी या मनोभाव को कलात्मक रूप से किसी भाषा के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है। भारत में कविता का इतिहास बहुत पुराना है। इसका प्रारम्भ भरतमुनि समझा जा सकता है। कविता का शाब्दिक अर्थ है- काव्यात्मक रचना या कवि की कृति, जो छंद की श्रृंखलाओं में विधिवत बांधी जाती है। काव्य वह रचना है, जिसमें चित किसी रस या मनोवेग से पूर्ण हो अर्थात् वह जिसमें चुने हुए शब्दों के द्वारा कल्पना और मनोवेगों का प्रभाव डालता है।

गीति कवि के अन्तःस्थल से निःसृत होने वाली वह मनोहर निर्झरिणी है, जिसमें संगीत की लहर और भावों की मधुरता समाविष्ट रहता है। निःसंदेह काव्य-कला अपने कोमलता स्वरूप को लेकर गीतिकाव्य में ही अवतरित हुई है। गीतिकाव्य में कवि भावानुकूल लयों में अपनी आत्मनिष्ठ वैक्तिक भावना व्यक्त करता है। भावनाओं की तीव्रता गीत का अन्यतम गुण है जिसे भाव-प्रवणता कहते हैं। डॉ० श्याम सुन्दर दास के अनुसार भी 'गीतिकाव्य में कवि अपनी-अपनी अन्तरात्मा में प्रवेश करता है, बाहय् जगत को अपने अन्तः करण में ले जाकर उसे अपने भाव में रंजित करता है। उसमें शब्द साधन के साथ स्वर की साधना होती है।'

नागपुरी शिष्ट साहित्य की आधारभूत अवधारणाओं में मनुष्य और प्रकृति, भाव और संवेदना का समन्वय है। इसी कारण प्रारम्भ से ही नागपुरी गीतों में सौन्दर्य की वर्णात्मक छवियाँ उपस्थित होती रही है। नागपुरी के प्राचीन शिष्ट काव्य का आलम्बन प्रधानतया भक्ति है, लेकिन भक्ति की पृष्ठभूमि में रूप-सौन्दर्य और प्राकृतिक-सौन्दर्य की मनोहर छटा बिखेरने में नागपुरी के ज्ञात-अज्ञात प्राचीन कवियों ने कोई कसर नहीं उठा रही है। सौन्दर्य के मनोहर संसार में विचरण करना उनके लिए सदा प्रिय

रहा है। सौन्दर्य को कविता में मूर्त करने की सर्वाधिक प्रणाली रूप-योजना की है। सच तो यह है कि प्रत्येक कवि अपना काव्य-रूप ही काव्य-सृजन में योगदान देता हुआ, कवि के काव्य विभिन्न तत्वों और उसके अनुभवों की एकाग्रता की रक्षा करता है। इस प्रकार कोई भी कला कवि द्वारा 'रूप' प्राप्त करके ही सफल होती है। अतः काव्य-कृति में रूप का अभिप्राय ऐसी शब्द-अर्थमयी रचना से है, जिससे कवि का सौन्दर्य-बोध पाठक या दर्शक के लिए प्रेषणीय बन जाता है। समस्त कलाओं द्वारा रूप के सौन्दर्य का सृजन होता है। यह सृजन मानव मन की प्रियता और सौन्दर्यानुराग का बोधक है। इसके अतिरिक्त मानवेत्तर सत्ता का रूप भी किसी चेतना तत्व की कला का सृजन है । उस सृजन में महानता के सौन्दर्य का बोध आकाश, पर्वत, नदी, वन, वृक्षादि के रूप में होता है। इनकी एक स्वतंत्र सत्ता है और उसमें सौन्दर्य का एक अमानवीय तत्व है। इसे प्राकृतिक-सौन्दर्य की संज्ञा दी जाएगी।

आज नागपुरी पद्य साहित्य में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक जैसी आधुनिकता के प्रभाव को देखा जा रहा है। नागपुरी के गीत, कविता, दोहा में भी छायावादी, प्रगतिवादी, रहस्यवादी, प्रयोगवादी जैसे परिवर्तन देखें जा सकते हैं।

प्रेरणाः- नागपुरी भाषा साहित्य का अपना एक विशिष्ट एवं गौरवपूर्ण स्थान है। झारखण्ड में अनेक प्रकार की जातियाँ, संस्कृति एंव भाषाएं हैं। लेकिन नागपुरी भाषा को झारखण्ड की मुख्य एंव सम्पर्क भाषा मानी गयी है। चूकिं इसका साहित्य भी भरा-पूरा है। नागपुरी साहित्य में प्राचीन काल से ही एक से बढ़कर एक साहित्यकार होते रहे हैं। जिन्होंने अपनी रचना एंव काव्य सौन्दर्य से साहित्य को निंरतर आगे बढ़ाते रहे हैं। आज नागपुरी जैसे क्षेत्रीय भाषाओं का महत्व आधुनिक परिपेक्ष्य में

बहुत अधिक हो गया है। आज नागपुरी भाषा साहित्य में भी पद्‌य साहित्य की धारा प्रवाहित हो रही है। इस प्रवाहित धारा को आगे बढा़ने में अनेक साहित्यकार अपना योगदान दे रहे हैं।

उपर्युक्त नागपुरी भाषा साहित्य की विकास यात्रा में योगदान करने वालों की सूची में आने की चाह ने मुझे हमेशा अपने भाषा-साहित्य को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है। यही कारण है कि- मैं इस शोध विषय **"नागपुरी काव्य में गीतितत्व की विवेचना: एक अध्ययन"** को पूरा करने की इच्छा रखती हूँ।

शोध का उद्‌धेश्य:-

1. नागपुरी काव्य में गीतितत्व को बतलाना।
2. नागपुरी पद्‌य साहित्य में काव्य के विविध रूप को बतलाना।
3. नागपुरी साहित्य के प्रमुख कवि एवं उनके काव्य को बतलाना।
4. नागपुरी काव्यों में संगीतात्मकता को स्पष्ट करना।
5. काव्यों में रसात्मकता का परिचय देना।
6. काव्यों में ध्वयानात्मकता का परिचय देना।
7. काव्यों में एकात्मकता का परिचय देना।
8. नागपुरी साहित में काव्य के स्थान को बतलाना।

शोध विधि:- निम्नलिखित विधियों के द्‌वारा शोध कार्य किये जा सकते हैं -

1. संदर्भ ग्रंथो का अध्ययन-
2. पत्र-पत्रिकाओं एंव विभिन्न आलेख का अध्ययन-
3. क्षेत्रीय साहित्य का अध्ययन एंव सर्वेक्षण -

4. व्यक्तिगत सम्पर्क एंव साक्षात्कार-
5. तुलनात्मक विधि-
6. विश्लेषणात्मक विधि-
7. आलोचनात्मक विधि-
8. विभिन्न पुस्तकालयों में अध्ययन-
9. नक्शा का प्रयोग-
10. इंटरनेट से खोज-
11. प्रश्नावली-

उपकरण :- निम्नलिखित सामग्री शोध कार्य के लिए उपयोग किये जा सकते हैंः-

1. शोध से संबंधित पुस्तकें, प्रकाशित रचनाएं, संदर्भ ग्रंथ हेतु पुस्तकें ।
2. पत्र-पत्रिकाएं- जैसे- गोतिया, जोहार, जय झारखण्ड, संगम, आज, नागपुरी समाचार इत्यादि।
3. टेप रिकॉर्डर - (साक्षात्कार, सभा आदि के लिए जरूरत।)
4. कैमरा- (आवश्यक चित्रों को एकत्रित करने, फोटो खिंचने एंव विडियो वगैरह तैयार करने के लिए आवश्यक।)
5. मोबाईल-
6. कंप्यूटर - (विस्तृत क्षेत्र में जानकारी हेतू)
7. इंटरनेट से खोज-
8. नक्शा, पेपर इत्यादि।

पूर्व अध्ययन और अनुसंधान :-

नागपुरी भाषा और साहित्य के विभिन्न पक्षों पर इधर अनुसंधान हुए हैं। पी.एच.डी. उपाधि के लिए नागपुरी भाषा, लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य के विभिन्न पक्षों पर शोध प्रबंध प्रस्तुत हुए हैं। परम्परा, प्रयोग, रस योजना, छंद रचना, अलंकार विधान, प्रेम-वर्णन, सामाजिक यथार्त आदि के साथ ही साथ गद्य विधाओं के रूपों पर भी शोध कार्य हुआ है। घासीराम, पीटर शांति नवरंगी, धनीराम बख्शी, शारदा प्रसााद शर्मा, नईमुद्दीन मिरदाहा, मधु मंसूरी, प्रफुल्ल कुमार राय आदि कई नागपुरी रचनाकारों पर भी शोध सम्पन्न हुए हैं। लेकिन अभी तक 'नागपुरी काव्य में गीतितत्व की विवेचना: एक अध्ययन' पर कोई अनुसंधान नहीं हुआ है। प्रस्तावित शोधकार्य अपनी मौलिक और नवीन धारणाओं के कारण मौलिक होगा।

शोध की प्रासंगिकता :-

नागपुरी भाषा-साहित्य जगत में पद्य साहित्य का प्रमुख स्थान है। अन्य भाषा-साहित्य की भाँति ही आज नागपुरी के काव्यों में रस, अलंकार, छंद, एवं गीतितत्व जैसे रूपों को देखा जा सकता है।

आज नागपुरी साहित्य के गद्य, पद्य क्षेत्रों में विभिन्न रचना होने के कारण दिनों-दिन नागपुरी भाषा-साहित्य का विकास आगे बढ़ रहा है। नागपुरी पद्य-साहित्य के अतंगर्त नयें कवि, लेखक, रचनाकार अपनी रचना को समाज के बीच आधुनिक ढंग से लोगों की इच्छानुसार प्रस्तुत कर रहे हैं।

शोध का समाज पर प्रभाव :-

"नागपुरी काव्य में गीतितत्व की विवेचना: एक अध्ययन" जैसे विषय पर शोध होने से समाज में बहुत ही साकारात्मक प्रभाव पडेगा। काव्य में ऐसे अनेक तत्व हैं जो काव्य की सुन्दरता को प्रभावशाली बनाती है। चूँकि लोग आज

समय के अनुसार चलना चाहते हैं। आज इस नयें युग में कम्पयुटर, इंटरनेट, रेडियो, टी.बी., मोबाईल जैसे तकनीक यंत्र नहीं होते तो शायद मानव आज इतना विकास अपने जीवन में नहीं कर पाता। ठीक इसी प्रकार साहित्य में भी राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक पक्ष से सम्बन्धित काव्य, गीत जैसे साहित्य में आधुनिकता का प्रभाव पड़ा है। जिससे अध्ययन करने से लोगों को काफी जानकारी होगी और लोगों को सामाजिक जीवन में चौतरफा विकास में काफी मदद मिलेगा।

उपर्युक्त 'शोध' विषय में काव्य में गीतितत्व पर चर्चा की जाएगी। अतः वर्तमान में समाज के सभी वर्गो के लोग इस शोध कार्य से लाभांवित हो सकेगें।

शोध प्रारूप :-

प्रस्तावित अनुसंधान को निम्नलिखित प्रारूप के अनुसार पूरा करने की योजना है :-

- **प्रस्तावना -**
- **शोध विषय की प्रेरणा -**
- **औचित्य -**
- **शोध कार्य की विषय सीमा -**
- **शोध विधि -**
- **विषय से संबंधित पूर्व में किये गये शोध कार्यो का विवरण -**

पहला अध्याय - नागपुरी काव्य के परिचय एवं विविध रूप -

(क) महाकाव्य -

- अविनासी घासी - कृष्ण कलाधर
- रामायनी सीतायन - मृत्युंजय नाथ शर्मा

(ख) खण्ड काव्य -

- मेवाड़ केशरी - सहनी उपेन्द्रपाल नहन
- विप्लवी महान - शारदा प्रसाद शर्मा
- भगवान एक पूरब के - शारदा प्रसाद शर्मा
- वीर राघव चरित्र - पौराणिक गौरीनन्दन शर्मा
- लव-कुश चरित - बलदेव साहु
- नल-दमयंती - दृगपाल राम देवघरिया

(ग) स्फूट काव्य (मुक्तक काव्य) -

- बीता भाइर ठाँव (कविता संग्रह) - प्रमोद कु. राय
- हम कहाँ चइल आली ? (कविता संग्रह) - शारदा प्रसाद शर्मा
- कुछ ओस कुछ अंगोर (कविता संग्रह) - शिव अवतार चौधरी
- रिंगचिंगिया (गद्य एवं पद्य संकलित) -प्रफुल्ल कु. राय
- गीत आइझ के कुछ काइल के (गीत संग्रह) - शारदा प्रसाद शर्मा
- सीठा कुछ मीठा (गीत संग्रह) - शारदा प्रसाद शर्मा
- जागी जवानी चमकी बिजुरी (क्रांतिकारी आउर श्रृंगारिक गीत) -लाल रणविजय नाथ शाहदेव

दूसरा अध्याय - नागपुरी साहित्य के प्रमुख कवि एवं उनके काव्य -

(क) नागपुरी के प्रमुख प्राचीन कवि एवं उनके काव्य -

- रघुनाथ नृपति -
- बरजू राम -

(ख) नागपुरी के प्रमुख मध्यकालिन कवि एवं उनके काव्य -

- हनुमान सिंह -
- घासीराम -

- कवि कचंन -
- दृग्पाल राम देवघरिया -
- धनिराम बक्शी -
- योगेन्द्रनाथ तिवारी -
- फादर पीटर शांति नवरंगी -

(ग) नागपुरी के प्रमुख आधुनिक कवि एवं उनके काव्य -

- प्रफुल्ल कुमार राय -
- शारदा प्रसाद शर्मा -
- लाल रणविजय नाथ शाहदेव -
- विसेश्वर प्रसाद केशरी -
- गिरीधारी राम गौंझू -
- कुमारी बासंती -

तीसरा अध्याय - नागपुरी काव्य में संगीतात्मकता (गीतितत्व) की विवेचना -

(क) राग

(ख) लय

(ग) ताल

(घ) रागिनी

(ड.) छंद

(च) अलंकार

(छ) गुण - दोष

चौथा अध्याय - नागपुरी काव्य में ध्वयानात्मकता (गीतितत्व) की विवेचना -

(क) शब्द शक्ति

(ख) लक्षणा

(ग) व्यंजना

पांचवा अध्याय - नागपुरी काव्य में रसात्मकता (गीतितत्व) की विवेचना -

(क) श्रृंगार रस

(ख) हास्य रस

(ग) करुण रस

(घ) रौद्र रस

(ड.) वीर रस

(च) भयानक रस

(छ) वीभत्स रस

(झ) अद्‌भुत रस

(ञ) शान्त रस

(ट) वत्सल रस

छठा अध्याय - नागपुरी काव्य में एकात्मकता (गीतितत्व) की विवेचना -

(क) निजी अनुभव

(ख) ईश्वर की कल्पना

(ग)

सातवां अध्याय - नागपुरी काव्य में भाषा-शैली (गीति तत्व) की भूमिका -

(क) ठेठ नागपुरी

(ख) बंगला मिश्र नागपुरी (कुरमाली, पंचपरगनिया, खोरठा)

आठवां अध्याय - नागपुरी साहित्य में काव्य का स्थान -

उपसंहार -

परिशिष्ट -

1. सहायक ग्रंथो की सूची-
2. पत्र-पत्रिका-
3. साक्षात्कार सूची-
4. चित्रावली -

नोटः- प्रस्तावित अनुसंधान की रूप रेखा में आवश्यक होने पर परिवर्तन भी किया जा सकता है।

शोधकर्ता

नैना तिर्की
एम.ए.,यू.जी.सी.नेट/जे.आर.एफ.
नागपुरी विभाग

शोध निर्देशक

डॉ॰ रामजय नाईक
सहायक प्राध्यापक
नागपुरी विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

जे.एन.कॉलेज धुर्वा, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

संदर्भ ग्रंथ की सूची

क्र.	लेखक	रचना	प्रकाशक	वर्ष
1.	'अनुज' डाँ॰ भुवनेश्वर	नागपुरी लोक साहित्य	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची।	1992
2.	'केशरी' डाँ॰ वी.पी.	नागपुरी कवि और उनके काव्य	नागपुरी सस्थान पिठोरिया, राँची।	2014
3.	'केशरी' डाँ॰ वी.पी.	नागपुरी गीतों में श्रृंगार रस	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची।	2002
4.	'केशरी' डाँ॰ वी॰पी॰	नागपुरी लोकगीत	झारखण्ड झरोखा, रातू रोड, राँची।	2007
5.	'केशरी' डाँ॰ वी.पी.	साहित्य के तत्व और आयाम	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची।	1971
6.	'गौंझू डाँ॰ गिरिधारी राम	नागपुरी के प्राचीन कवि	झारखण्ड झरोखा, रातू रोड, राँची।	2012
7.	'नहन' सहनी उपेन्द्र पाल	नागपुरी राग छंद	रामसुन्दर पाल सिंह पालकोट रोड गुमला	2004
8.	'नवरंगी' पीटर शांति	नागपुरी सदानी बोली का व्याकरण		

9.	'तिवारी' डॉ॰ उमेश नंद	आधुनिक नागपुरी साहित्य	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची।	2014
10.	बासंती डॉ॰ कुमारी	नागपुरी गीतों की छंद - रचना	किशोर विद्या निकेतन, बी॰ 2/ 236-ए, भदैनी, वाराणसी	1993
11.	कुमारी डॉ॰ समरिता	कवि रत्न शारदा प्रसाद वर्मा: - व्यक्तित्व एवं कृतित्व	के के पब्लिकेशन्स 618 कटरा इलाहाबाद 211002	2013
12.	विश्ववम्भर 'मानव' रामकिशोर शर्मा	आधुनिक कवि	लोकभारती प्रकाशन महात्मा गांधी मार्ग इलाहाबाद 211002	2011
13.	'साहू' डॉ॰ त्रिवेणी नाथ	नागपुरी काव्य में प्रकृति चित्रण	किशोर विद्यानिकेतन बी 2 236 ए भदैनी वाराणसी	2008

पत्र-पत्रिका

1. 'गोतिया' - ठुमसा टोली, चुटिया, राँची।
2. 'सहिया' - एम॰जी॰ टावर 23 पूर्वी जेल रोड, राँची।
3. 'डहर' - छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ।
4. 'संगोम' - आई॰टी॰ पब्लिकेशन कोकर, राँची।
5. राँची एक्सप्रेस - अपर बाजार, राँची।

6. आज - सामलौंग, राँची।

7. प्रभात खबर - कोकर, राँची।

8. हिन्दूस्तान - कोकर, राँची।

9. दैनिक जागरण - कोकर, राँची।

10. दैनिक भास्कर - रातू रोड, राँची।

11. सन्मार्ग - हरमू रोड, राँची।

12. आदिवासी - बिहार सरकार - राँची।

13. नागपुरी - वी/205 जगन्नाथपुर, राँची।

14. नागपुरी समाचार - थड़पखना, राँची।

नोटः- प्रस्तावित प्रारूप में आवश्यक होने पर परिवर्तन किया जा सकता है।